

ASPIRA ARCHIVES

1821

॥ राजा क क पूजा ॥ ॥ जन्म यति
काय ॐ द मा स न न म ४ पू र्ण
न म ४ ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ क क क
न क ना त्या दि ॥ ॥ वेद ॥ ॥
ॐ ना म स त्या दि ॥ ॥ ॐ स क
म म य त्या दि ॥ ॥ ॐ यू न स्त्रा
दि त्या ॐ त्या दि ॥ ॥ जाय ॥ ॥
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ॥ स्तुत ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥

[illegible]

४५५मनयवनाजीयससहस
धाययययम॥ॐ॥साम४५वः
नसाम४५वतनसेवकनमोरुग
यामेसुन्धन४५जमानाययव
न॥ॐ॥उ॥यवतस्यवायधी
स४५वतनयावायुथिवीसाय
वतंसहताययवतवि॥ॐ॥स
स्वादवस४५वतनयानिदि॥ॐ॥
सस्वादवस॥ॐ॥ॐ॥उ॥वसम
५॥ॐ॥ॐ॥न॥जातीतहकैवकु
कुनगनुगम४५तयात्रहमनूरु
कैरुक्रयामि॥वा॥न्दवीपूषाः
नासामसहस५गुसहस॥ॐ॥
नखाहा॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
मयवतुक्रयामि॥वा॥न्दवीपूषाः
हिथिवि॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
अ॥न॥नामानिदवसामाकुक्र
वतात॥॥ॐ॥क॥क॥र॥ॐ॥यैव
अ॥ह॥स॥य॥ना॥व॥त॥व॥र॥क॥ॐ॥
क॥स॥य॥ना॥ग॥४५॥र॥स॥मा॥दा॥री
नाम॥जा॥ग॥पि॥न॥से॥वा॥ग॥क्रा॥मि

तसेनसामसामायस्वाहा॥ॐ॥
ॐ॥उ॥ठि॥क॥त्वा॥द॥व॥स॥मा॥ग्ने
४५५यैवा॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
द॥व॥स॥मा॥नु॥स॥यि॥या॥म्या॥ॐ॥
यी॥क्र॥से॥स॥स्वा॥त्वा॥द॥व॥स॥मा
वि॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
ॐ॥यि॥दि॥॥॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
जानमव॥जा॥ग्नि॥म॥त्वा॥न॥रा॥म
हा॥ग्रा॥दि॥त्वा॥वि॥मं॥ॐ॥सूर्य॥व॥क्र
ॐ॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
ॐ॥स॥दि॥ता॥त्वा॥स॥वा॥ना॥ॐ॥सू॥च
ता॥म॥ग्नि॥ग॥ग॥रु॥व॥ति॥ना॥ॐ॥सा
मा॥व॥न॥स॥यि॥ति॥ना॥ॐ॥व॥रु॥स॥यि॥ति॥द्व
व॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
मि॥ग॥४५॥स॥या॥व॥न॥ॐ॥ॐ॥य॥तीः
नाम्॥॥॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
त॥ॐ॥सू॥व॥र्ध॥म॥रु॥त॥क॥ग्रा॥य॥मः
ह॥त॥क्र॥वा॥य॥म॥रु॥त॥जा॥नू॥जा॥य
य॥ॐ॥ॐ॥उ॥न॥कैवकु
म॥य॥य॥ग॥म॥म॥य॥य॥ग॥म॥य॥ति
स॥य॥य॥व॥मी॥ना॥जा॥सामा॥सा॥यै

ॐ नमो नमो ॐ नमो ॥ ॐ साम
स्यन्निवित्रसिन्ववमवि वि
रुयात्ता ॥ ॐ नमो यस्या हा सामाय
स्या हा ॥ ॐ विष्णु स्या हा ॥ ॐ नमो
ये स्या हा ॥ ॐ यस्या हा ॥ ॐ वरुणा
तय स्या हा ॥ ॐ उडाय स्या हा ॥ ॐ ध
वाय स्या हा ॥ ॐ अकाय स्या हा
ॐ साय स्या हा ॥ ॐ नमो यस्या हा ॥
ॐ सामाय स्या हा ॥ ॐ यविष्णु स्या
वैष्णो स्या विष्णुर्वैष्णु स्या उडयना
स्य विष्णु स्या विष्णु स्या स्या स्या
सिंहि ॥ ॐ निरुद्ध मसिवाचाव
न्युक्त्या हा जा ॥ ॐ सामु स्या दाग
मसि स्या हा जा ॥ ॐ स्वर्ण साम स्या
युमनरु विष्णु स्या सिर्हा ॥ ॐ साम
स्य स्या वरुणा स्या स्या स्या स्या
युना ॥ ॐ गुपतिना स्या तिदिद्युः
स्या हि ॥ ॐ ॐ नमो य गृह्यतः
य स्या हा सामाय वन स्या नयस्य
ॐ मन्त्रा मा ज स्या हा ॐ स्या
माय स्या हा ॥ ॐ यिदिर्मा माहि

ॐ सोमो नमो नमो ॥ ॐ यनु
मानुष्मन्त्रा स्या वरुणा
दिवि यस्या विस्मर्ग वरुणा य
स्य ॥ ॐ नमो यत्रा नि कुदत्त
॥ ॐ साम यत्रा ॐ साम नमो
मा स्या ॐ सामा वीर्य कर्मनीद
दाति सादर्थ्य वित्रा य ॐ स्या
यै विरुणा वरुणा यी ददा दमा
॥ ॐ ॐ नमो नमो ॥ ॐ
जय ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ
त ॐ नमो नमो ॐ ॐ ॥ ॐ
॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ यत्रा विरुणा ॥ ॐ स्या न
कुरुणा स्या य ॐ दमा स्या नमो
युष्मन्त्रा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
स्या हा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
स्या ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
स्य नमो सामा मन्त्रा गी हा नमो
ददाति वरुणा स्या स्या स्या
नमो विष्णु नमो वरुणा स्या
विष्णु नमो ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

[illegible][illegible]

नमः नहि नाम्ना कनत्यह
 आय ० विता विमत ॥ ॥ ॐ
 दीर्घायस्त्राय वलाय वरुं स
 स्य जास्त्राय सह साग्रुथ जी
 वस नदहातम् ॥ ॥ ॐ जदश
 गच वृणहे नूदगा ग्रहिस्य
 ० सर्वनादिनुत वस । तत्र निर्वि
 स्य दर्शिता क्रान्तिरुत तद्वि स्य
 ० विष्णुमाहा विप्रार्चनं ॥ ॥
 ॐ स्वस्ति विष्णु दातु धान्य ० य
 यिष्टं लुधा गित ० न काना क
 मत्सना ॥ ॥ ॐ यारुतिनी
 यारुता ० यय्या याज्य पूषिनी
 वृहस्पतिप्रह्ना सुता मूर्चत
 ० रुत ॥ ॥ ॐ धाव्यतु त्नी
 लादि ॥ ॥ ॐ नमः ० यय्य यय
 यर्क्ष सदायचन मउपुनमा
 नायचा विप्रुत येन मः ० ग्रा
 विदत ययुखिदत यनमः
 ० पूरुत त्या धनू कृत्य ध्यवान
 नमो वः ० कि विरुत्या दवान

० ददय त्या नमान भाविचि
 चकत्या विविचक त्या नमः
 नानिहंत ॥ ॥
 ॥ ॐ स्वस्ति मूर्धन्य ॥ ॥
 ॐ समित ० संकत्या ॥ ॥
 विप्रार्च विप्रुसमनस्यमानो
 ० वृष मूर्क्ष महि सं दसा नो स
 नामना ० सि सं वता स मूचि
 शान्या कनम् ॥ ॥ ॐ नमः ० यय्य
 वरुत न्न वृष मूर्क्ष जमनाय
 धदि ॥ ॥ ॐ धाव्यतु त्नी
 ॥ ॥ यना नूच विप्र ॥ ॥
 ॥ ॥
 ॥ १०॥ निरुहियाय ॥ ॥ ॥
 चरु ० स्वस्ति यय्य यय्य यद्वि
 दादहा दवता । नूचो ना निप्रु
 कूर्वी त म हायात कना धनं
 ॥ ॥ १०॥ स्वस्ति न नूच वृह
 धवा ० स्वस्ति न ० यय्या विष्णु
 दा ॥ ॥ स्वस्ति न नूचो नूचि
 नमि ० स्वस्ति ना वृहस्पति

व्यसिभिनाश्रितेन गृधि ॥ ६ ॥
॥ स्वस्ति यथा मनस्य न वसुधा
यचतुमसा वृद्धाय न दध
तामना जानता सं गमसहि ॥
॥ स्वस्ति यननाम दमम
नमिर्महर्षुते वायुसेदवताः
नी ॥ त्रसु नमिभिनु सखे समः
सुखरुशसानामहिमा नरुम
॥ ७ ॥ अयं हामुचमं गिविसे
जयन स्वस्ति स्वर्य मनसा चना
अर्कयुतयानि ४८ नर्षयपय
स्वस्ति संवाज स्वहयना त्रसु
॥ ८ ॥ ॥ कुं कनिकुदज
नयं वकुवामयदि वाचमदि
दवनाहं ॥ सुमंगल व्यणकून
रुवा ३ सिमात्वा काचिद्रहिमा
विशिष्टा विदत् ॥ १ ॥ मात्वा स
न उर्द्धनीर्मा सुय (सु) मात्वाः
विदति वमाची नात्र स्फात् ॥
॥ अह्याम नूयदिर्गं कुनिकः
दत्त सुमंगला रुड वाजीवद

॥ २ ॥ नूयकुन्द किंता गृह
समसमसा रुड वाजीवक
नामान सुन वृहीतमाद्य
स ० सवृहद नमविद (थसु
वीना ॥ ३ ॥ युदकिरुड हिग
लनिका नया वयावद निभु
भाकून य ४ उरु वायावद
तिसामग ० वगयर्गुचणः
दूरं चान्नाजसि ॥ ४ ॥ उडुद
वडाकून सामगयसि वक्रय
गु ० वसवत वृर्षाणि ॥ दृष्टा
ववाजी विसुमती परिष्ठा ४
सर्वमान ४ वाकून रुडमाव
दविष्टमान ४ वाकून वृष्म
वद ॥ ५ ॥ रुड वदद किंताः
रुड मरुवगावद ॥ रुड पून
स्फान्नावद रुड वृदै पय्यक
पिङ्गल ॥ ६ ॥ रुड वद पून
रुड वद गुरु वृच ॥ रुड मः
स्फाक वद रुड नात्र हयवः
द ॥ ७ ॥ रुड मयक नावद रु

मयविष्णुद्वय। रुदं रुद ननु
वद रुदं न ४ सर्वेता वद ॥ ८ ॥ न
सय लेय प्रस्तान ४ विदं दक्षिण
तस्तु वि। नुरुयं सततं यज्या रु
दमस्तु प्रताप ॥ ९ ॥ यो वना
निष्ठ रुय सिय रुयामि वद नः
हि। स कृ न कृ दक्षिण सतत
गहि ना वद ॥ १० ॥ नृव दं ह्वं
स कृ न रुद मा वद स्तु वी मा सी
न ४ सुम गित कि छिन ४ य दृष्ट
दं वद सिक कं तिय था वरु द
तम वि द (थ सु वी ना ॥ ११ ॥ ॥
॥ ॥ नृ ४ वि ४ ना वृष हः
न ही मा व ना च न ४। को रु न व
व नी ना म् स कृ न ना नि मि व न
क वी न ४ हा त ० ह ना नृ ज यः
सा क मि नृ ४ ॥ ॥ नृ य क्रोः
गता दू न म् द ति दे वं त दू स क
नृ जे वे ति। दू रं ग म् र्था ति
॥ ति वे कं त म् म न ४ विः

वही कल्या मस्तु ॥ ॥
॥ ॥ स रु प्र ४ यो य नृ व ४ स रु प्र
क ४ स रु प्र या नृ। स रु मि ० सर्व
तस्तु त्वा र्थ मि दं द ४ नृ र्त्त ॥ ॥
॥ ॥ नृ वि ४ नृ रु त्ति व रु सा
म्य म् थ य द व द रु य ना व वि
दू रं। वा न रु ना जा नृ हि न रुः
नि न्ना ना य जा ४ य था य य नृ थ
वि ना ज ति ॥ ॥ नृ न म स्तु
नृ द म न्य व १ ४ ता न १ ० ० य व
न म ४ वा कृ था म् न न न म ४ ॥
॥ ॥ नृ व य ० सा म व न वे
ते म न रु न वृ वि रु त ४। य जा
व रु स व म हि ॥ १ ॥ नृ व न नृ द
रा ग ४ स रु स मा मि क या र्त्त रु
व रु स रु हे व न नृ द रा ग नृ वृ
रु य ४ ४। नृ व नृ द म दी म रु
व द वं य न रु कं ॥ य था ना व रु स
रु न रु थ न रु य ४ रु य न रुः
थ ना ना व सा य या नृ ॥ ३ ॥ रु य



उमसिहसर्जंगवस्त्राय
 नृणां यरुमर्जम् । सर्वम
 व्यासमर्थ्य ॥ ४ ॥ गुप्तक
 उज्जामहसुगन्धिम्यद्विव
 द्दनी ॥ उर्वोचकमिववन्ध
 नास्यार्मकीयमास्यतात
 ॥ अस्वर्कज्जामहसुगन्धि
 म्यद्विवदनी ॥ उर्वोचकः
 मिववन्धनादिस्यार्मकीय
 मास्यत ॥ ५ ॥ जुतकेचूडा
 वसन्कनयजाम् उवतानी
 हि । अत्रवततधन्नापिनार्क
 वस ४ कृत्वासात्रदि ७ स
 न ४ द्विवातीदि ॥ ५ ॥ गाय
 र्थं उमद ८ कस्ययस्यया
 यर्षम् ॥ यद्दत्तयुगायर्षन
 न्नात्रमुगायर्षम् ॥ ६ ॥ वि
 या नामासिस्वयितिरुप्रिर्त
 तमरुत्तुसाम १२ ७ सी

४ निवर्हया म्या यथा नार्ध
यय ऊन नाय ग्रा म्या वाय
सुय जात्वा य सुवी र्या य ॥
॥ ॐ स्व कि न नू न्द्रा व
इति वा ॥ ॐ यय ४ य
थिया ॥ ॐ विष्णु न र्ने
द ॥ ॐ नू नि र्दे व ता
जा ता दे व ता ॥ ७ ॥ ॥
थ ना सा द का य ल स य र्ने
या य ॥ ॐ द्यो ४ ण कि
न ॥ ॥ ण कि क लान वि
य ॥ सु ण कि र्दे व नु य र्दि र्
व नु ॥ ॥ थ ना नू र्दे वि य
॥ ॥ थ न धून का व गुरु
द का नू णी र्दे द या य ॥ ॥
य दार्च न या य ॥ ॥ न्या सा
ग रु स द कि ण नू य क ॥
॥ ॥ थ ना दान द का म रु
नि र्दे नी ॥ ॐ उ र्दे य क

मसस्यजिह्वा ४ यद्यन्तः ३
 रुजैः दर्वदवशास्यैम
 सैमकाजिह्वरुजैः ॥ ॥
 त्रयस्य ३ ॥ न्यास ॥ ॥
 वाचन ॥ ॥
 स्थनादानयाय ॥ ॥ वा
 क्तनयुजा ॥ ॥ ॐ नमः
 दिव्याय ह्रीं ह्यनाय नमः
 नियत्यधिदवताय नमः
 दत्तासुनीनमयूषीनमः
 ४ ॥ नर्वहस्यार्थनमः ॥
 प्रकचननेममप्रकच
 शयवीनकयूषीनमः ॥
 ॥ प्रकवातिकायूथानमः
 ४ ॥ प्रकवृत्तिकादीथानमः
 ४ ॥ ॥ नमः ॥ ॥
 श्रीहिसयूजर्मे ॥ ३ ॥ ॐ नमः
 दिव्याय नमः ॥ ॥ ॐ ह्यनाय
 नमः ॥ ॥ नमिपुलादि

नमिपु
 ४
 ३

नायेनमः ४ ॥ ॥ उजमानक
 सस्यमसुजानकीलखन
 हायैकैकय ॥ ॥ दानवा
 क ॥ ॥ ॐ कपिलसर्वद
 वार्तायूजनीयाद्यनादि
 लातीर्थदवामयीयसा
 लन ४ ॥ नमिपुययुजम ॥ ॥
 कृष्णनयविद्युदीहिता
 थियक नमः ४ ॥ नमः ॥
 कपिलधनूदाने दानवै
 वाक्कलमददस्य नमः ॥
 मनुजय ॥ ॥ ॐ नमः
 वातालकलयादि ॥ ॥ नमः
 यादि ॥ ॥ यजमानस्यय
 थाउशार्थकलाशकि नमः
 दिव्यदेवतासूयीयार्थ नमः
 मूकवद नमः ४ ॥ नमः ॥
 मूकनामगर्माद्यकल
 य नमः ४ ॥ नमः ॥

वाक्मनदजा॥ ॥ ॐ सा
माय उमाय आययुत्यधि
दवताय ॐ दमासननमः
यूष्यनमः॥ ॥ नवैरुस्तु
नमः॥ ॥ ॐ तयन्दननमः
॥ ॐ तयश्रियवीनकयूष्य
नमः॥ ॥ ॐ तवातिकायूषा
२॥ ॥ ॐ तवृत्तिकादीयाश
॥ ॥ ॐ तगंगादि ॥ ॥ वीहिय
जनैः॥ ॥ ॐ सामायनमः उ
माय २ आययुत्यधिदवता
य २॥ ॥ ॐ कृष्णनिलविया
वाक् ॥ ॐ यूपस्थस्यैर्गैरय
स्थानीमंगलानीचमंगलैः
विष्णुनाविष्णुनानिर्घ्नत
४०॥ ॐ निलययचुम ॥ ॥ कृ
ष्णनयविया ॥ ॥ नतत ॥ ॐ तः
हीरदानं ॥ ॥ दानवी ॥ ॥ वाक्म
॥ ॥ तददस्व ॥ ॥ ॥ गायत्रीम
स्तुतय ॥ ॥ ॥ त्रयादि ॥ ॥ यः
उमानस्ययथा उच्यते क

लाङ्गि सामदवतासुधी री
र्षः ॥ ॐ कृष्णनामधाम्निवा
क्मय ॥ ॐ कृष्णकामः ॥ ॐ
मी ॥ ॐ तर्हीरवान् ॥ ॐ तमह
संयदद ॥ ॥ ॐ तनदाननर
गवान् ॥ ॐ सामदवतासुधी
वज्रदारुवन्तु ॥ ॥ ॥ विय ॥
॥ ॐ कोदादिली ॥ ॥ ॐ
दकामे कामयत सामे काम
समृद्धते ॥ ॥ ॐ तनराय ॥
॥ ॐ वीहिविया ॥ ॥ नतत ॥ ॐ तति
॥ ॐ वीहिया ॥ ॐ ॥ ॐ तमह
संयदद ॥ ॥ ॐ तदक्षिणा ॥ ॐ त
तत ॥ ॐ तर्हीरवान् ॥ ॐ तयतिवा
र्षः ॥ ॐ तवर्षदक्षिणा ॥ ॐ तमह
संयदद ॥ ॥ ॐ तर्हीरवान् ॥ ॐ त
ॐ तमह ॥ ॥ ॐ तनराय ॥ ॥ ॐ तनराय
ॐ तदितिश्री ॥ ॐ तदितिश्री ॥ ॐ त
ॐ तदितिश्री ॥ ॐ तदितिश्री ॥ ॐ त
ॐ तदितिश्री ॥ ॐ तदितिश्री ॥ ॐ त
ॐ तदितिश्री ॥ ॐ तदितिश्री ॥ ॐ त
ॐ तदितिश्री ॥ ॐ तदितिश्री ॥ ॐ त

ॐ नित्यम् ॥ ॥ निष्ठुभवविय
 ॥ ॥ ॐ सामायादि ॥ यथा
 दीयमाना ॐ दमन्तसं कृत्य
 सिद्धिप्रभु ॥ ॥ दक्षिणा ॥ ॥
 साग ॥ ॐ दत्तात्रेय नमः
 धूपययसा दत्तात्रेय नमः
 गलः सङ्ग कृति कज नमः
 दिवसवृत्ताङ्क मधुल ॥
 काशवज्रिगत समुद्र दि
 वसन्तगण्यगण्यगुजावन
 सामुद्रमाधिदवक मयूः
 युष्माधिदाह नमः ॥ ॥
 नृगगन्धदि ॥ ॥ ॐ
 श्रीगणेशाय ॥ वाक्मनयुजा
 ॥ ॐ श्रीगणेशाय स्वदायकि
 नित्यप्रियदवताय ॐ दम
 सने २४ यथै २४ ॥ ॥ नव
 रुसाय ॥ ॥ नकचन्दनः
 २४ ॥ नकयक्षीयवीनकय
 यै २४ ॥ नकवातिकायथा

२४ ॥ नकवृत्तिकदीया २४ ॥
 नृगगन्धदि ॥ ॥ वीहियुगा
 ॥ ३ ॥ ॐ श्रीगणेशाय २४ ॥ स्वदा
 य २४ ॥ नित्यप्रियदवताय
 २४ ॥ ॥ कृष्णलमलकायाव
 लैखहायकैतया वाक्का ॥ ॥
 ॐ यमोस्त्वैवृष नृयलजगद
 नन्दकात्रक ४ ॥ नृयमूर्तिन
 नित्यप्रियदवताय २४ ॥ नित्यप्रिय
 दवताय ॥ ॥ कृष्णनयविश ॥ वी
 हियुगा ॥ ॥ नृगगन्धदि ॥ ॥
 मन्त्रपूरुदने ॥ दातय ॥ ॥
 वाक्मनयुजा ॥ ॥ गाय
 तामस्तुलजय ॥ ॥ ॐ नृय
 दि ॥ ॥ जजमानस्य यथा
 नृय कृष्णकि नृगगन्धदि
 गायत्रीयर्थ नृयकनाम
 मल्लवाक्मनयुजा नृयकका
 म ४ ॐ सामायादि ॥ नृयक
 नृयमहं प्रियदद ॥ नृयनद

मनरुगवान् श्रीमत्रदवतासु
श्रीतावत्रदाहवक्तु ॥ ॥ विष्णु
॥ वाक्कलानस्यसि ॥ ॐ कोदं
गुणत्यादि ॥ ॥ ॐ ॐ दं का
म ॥ लंखन हय ॥ ॥ श्रीहिः
विय ॥ नतत्त्रकसर्वयष्ट्व
हियागुं तुल्यमहं संपुददा
॥ लंदक्षिष्ण ॥ ॥ कनेतत्त्र
कमनृष्टुह दानयुतिशाय
सुवर्षदक्षिष्णु तुल्यमहं संपु
ददा ॥ ॥ अणिर्वोद ॥ ॥
ॐ अग्निमूर्द्धा ॥ ॥ यूननाः
णिर्वोद ॥ ॐ दीर्घाय ह्यय
त्यादि ॥ ॥ निष्ठावविय ॥ ॥ श्री
गमत्रायत्यादिनायथादीयः
माना ॐ दमर्त्तसंकल्पसिः
द्वित्रमु ॥ ॥ दक्षिष्ण ॥ ॥
लाह ॥ ॥ याम्यलाहिनश्रुसम
सुसगमं पूर्वोक्तथावाटजः
रात्रेद्यजकृतस्रवनिदश
मास्कंदाधिद्विषाधियै ॥ ॥

यं शुभं त्रुभूमककुदहन
रुगान्तमिर्गुगुं ॥ ॥ नकैय
स्यमनृष्टुहं वियसुदनिः
त्यंनमामंगलं ॥ ॥ अशः
गन्धादि ॥ ॥

ॐ ईवधया ॥ वाक्कलपूजा ॥
॥ ॐ वृक्षयनात्रायनायवि
षुषुष्यविदवताय ॐ दमा
सुनं २४ यूप्यं नमः ॥ नवेह
लायं नमः ॥ ॥ यीतयन्य
ननमः ॥ यीतयशायव
कयूप्यं नमः ॥ ॥ यीतवाः
तिकाधूथानमः ॥ यीतवृह
कादियानमः ॥ ॥ अश्रुग
न्धादि ॥ श्रीहिसुयुजर्न ॥
३ ॥ ॥ ॐ वृक्षयनमः ॥ न
त्रायनायनमः ॥ विष्णुषुष्य
विदवतायनमः ॥ ॥ क
गलामलकायावर्त्तखला
यकंतय ॥ ॥ दानवाय ॥ ॥
ॐ हिमस्वगर्भगर्भहृष्ट

नमो कल्याणिद्विपुत्रे ॥ ॥ दत्ति
ना ॥ ॥ एतन् ॥ ॥ अथ वीर्यं
हृदा तकाग्नि नवमी दयं च
गान्धर्वसिंदधला गवतः स
जात नवमी खल्ला गधूयेदह
ता नानैवाध्यम हामखकन
दिर्ज शुक्ल सुकाशिय व
दाद्यः सिद्धयूर्ध्वमस्तु लगत
यथा प्रियत्वा यथा ॥ ॥ अथ
गन्धादि ॥

नैः॥ ॥ हानेष्ठवनाय नमः
यमाय नमः॥ यजुष्यवि
दवताय नमः॥ ॥ कृष्णहं
मस्तुत्तरेखहायकंतया॥
दानवाक्॥ ॥ गुंगवामेण
वृत्तिवृत्तिरुवनानिचनुर्द
हायस्मारुसाक्षरं मस्याः
दिहलाकयत्रपुत्र॥ तस्मा
ल्वंयथिवीसर्वोन्नतकणः
वसन्निहा। सर्वपापहनाः
गवस्तुतठ्ठाकिंयुयक्तुम
॥ ॥ कृष्णनवविद्या॥ ॥ उ
नतुकुष्टुगवीदानंदान्तयो
॥ वाक्काशानददस्व॥ ॥ ग
यगीमर्तुनऊय॥ ॥ अद्याः
दि॥ यजमानस्य ऊथाउच्चा
येकुलाणकिं हानेष्ठवनाय
तासूयीत्यर्थः शाश्वतमुकना
मस्तुतठ्ठाकिंयुयक्तुम
अमुककामः०० मां कुरुगः